निकाला हुआ।
माना के स्वरूप की व्याख्या करते हुए प्रो० बाइट हैड ने कहा है कि यह शक्ति अलौकिक शक्ति का प्रमाण है जिसके आधार पर आदिम मनुष्यों को प्रभावित किया जाता है।
प्रागैतिक काल के लोगों की यह धारणा थी कि यदि राजा माना से युक्त योद्धा प्रहारक युद्ध में भाग लेता है तो उसकी विजय निश्चित है। विजय का पूरा श्रेय सैन्य शक्ति को न देकर माना को ही दिया जाता था।
आर. आर. मैरेट के अनुसार मनाइजम जीववाद के लिए आधार बनाता है। इन उक्त कारणों से यह स्पष्ट है कि मनाइजम जीववाद के पहले की अवस्था है। जीववाद के पूर्व प्राचीन काल के लोगों ने माना रूपी महत्वपूर्ण और असीमशक्ति की उपासना करना आरम्भ कर दिया था।
अतः मनाइजम जीववाद के पहले की अवस्था है। क्योंकि आदिम मानवों में माना को विभूत अदृश्य एक शक्ति मान लिया गया है इस प्रकार माना को शक्ति-शील माना गया है।